पीर कैसा होना चाहिए?



तर्तीब व तालीफ

मुहम्मद अब्दुर्रहीम खान क़ादरी रज़वी
जमदा शाही ज़िला बस्ती यू पी 272002
खतीब व इमाम जामा मस्जिद दमुआ
ज़िला छिन्दवाड़ा (मध्य प्रदेश) 480555

मोबाइल नम्बरः 7415066579

नाशिर :– ख़ान्क़ाहे रज़्विय्या राम नगर दमुआ
ज़िला छिन्दवाड़ा (मध्य प्रदेश)480555
तअ़दाद अ़शाअ़त :– 1000 हज़ार
लेखक:–**मुहम्मद अब्दुर्रहीम खान क़ादरी रज़वी**
जमदा शाही ज़िला बस्ती यू पी 272002
खतीब व इमाम जामा मस्जिद दमुआ
ज़िला छिन्दवाड़ा (मध्य प्रदेश) 480555

E:mail - khanjamdashahi@gmail.com
www.jamdashahi.blogspot.com
www.issuu.com/abdurrahimkhan

बैअ़त व इरशाद के अहकाम व मसाइल

जामेअ़ शराइत पीर व मुरीद होना हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम से अपनी निस्बत व तअ़ल्लुक़ का उस्तवार (मज़बूत)करना है इस लिए बैअ़त के लिए पीर का जामे शराइत होना लाज़िम है तो सही पीर वही शख़्स हो सकता है जिस के अन्दर कम अज़कम नीचे की तीन शराइत मौजूद हों (मुरत्तिब)

बैअ़त (मुरीद होने) के शराइत

बैअ़त (मुरीद) उस शख़्स से होना चाहिए जिस में यह चार बातें हों वरना बैअ़त जाइज़ न होगी।

1 : सुन्नी सहीहुल अ़क़ीदा हो। (यअ़नी देव बन्दी,वहाबी क़ादयानी,राफज़ी,किसी भी बातिल फिरक़े का न हो।)

2 : कम अज़ कम इतना इल्म ज़रुरी है कि बिला किसी की इम्दाद (मदद) के अपनी ज़रुरत के मसाइल किताब से निकाल सके।

3 : उस का सिलसिला हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम तक मुत्तसिल हो कहीं मुन्क़ता (कटा)न हो।

4 : फासिक़ मुअ़लिन न हो। (यअ़नी खुले आ़म एलानिया गुनाहे कबीरा न करता हो,जैसे चोरी करना या झूठ बोलना दाढ़ी बनवाना, या लम्बे लम्बे बाल रखना या ग़ीबत ज़िना करना, शराब पीना,उलमा की बुराई करना, रिज़्के हराम हासिल करना,नमाज़ न पढ़ना,क़व्वाली सुन्ना,यह सब बड़े बड़े गुनाह हैं। बड़े बड़े गुनाह करने वाले को फासिक़ कहते हैं। और यह सब गुनाह खुले आम करने वाले को फासिक़े मुअ़लिन कहते हैं। पीर की चौथी शराइत है कि फासिक़े मुअ़लिन न हो।

हक़ीक़ी बैअ़त (मुरीदी) का मतलब

बअ़त (मुरीदी) के माने हैं पूरे तौर से पीर के हाथ पर बिक जाना। लोग बैअ़त (रस्मी तौर)पर होते हैं। बैअ़त के माना नहीं जानते। बैअ़त उसे कहते हैं।कि हज़रत यह़या मुनेरी के एक मुरीद दरिया में डुब रहे थे,हज़रत ख़िज़्र अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम ज़ाहिर हुए और फरमाया अपना हाथ मुझे दे कि तुझे निकाल लूं। उन मुरीद ने अ़र्ज़ की यह हाथ यहया मुनेरी के हाथ में दे चुका हूं अब दूसरे को न दूंगा, हज़रत ख़िज़्र अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम ग़ायब हो गए

और हज़रत यह्या मनेरी ज़ाहिर हुए और उन को निकाल लिया।

तज्दीदे बैअ़त (फिर से नए सिरे मुरीद)

जब कोई ईमान वाला मुरीद होने के बाद कुफ्र की बोली बोल दे या कोई कुफ्र वाला कोई काम कर दे तो वह ईमान से खारिज हो जाता है। जब वह ईमान से खारिज हो जाता है तो उसे फिर से मज़हबे इस्लाम में दाखिल होने के लिए जो कुफ्र किया है उस कुफ्र से तौबा करना होगा और फिर से नए सिरे कलिमा पढ़ना होगा और बीवी वाला है तो उसी बीवी से नए सिरे से नए मेहर के साथ निकाह करना होगा और अगर वह मुरीद था तो उसी पीर से नए सिरे से मुरीद होना होगा फिर से मुरीद होने का नाम तज्दीदे बैअ़त है।

हुजूर के ज़ाहिरी ज़माने में भी तज्दीदे बैअ़त होती थी। हुजूरे अक्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने सलमा बिन अकूअ़ रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से एक जलसा (बैठक) में तीन बार बैअ़त ली, (बुखारी,अन्मल्फ़ूज़ सफा, 46, 47)

दूसरे पीर की त़रफ रुजूअ़

किसी शैख़ से बैअ़त कर के दूसरे की तरफ रुजूअ़ कर सकता है या नही ? इस सिलसिले में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्देसा सिर्रहू फरमाते हैं कि– अगर पहले में कुछ नुक़्सान हो तो बैअ़त हो सकती है। वरना नहीं अल्बत्ता तज्दीदे बैअ़त कर सकता है । अ़दी बिन मुसाफिर रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फरमाते हैं : मैं किसी सिलसिले का भी बा परहेज़ पीर व मुर्शिद आए तो उस से बैअ़त ले लेता हूं सिवा ग़लामाने क़ादरी के ।

इस लिए कि समन्दर को छोड़ कर नहेर की तरफ कोई नहीं आता।यअ़नी जो सिलसिल–ए–क़ादिरिया में मुरीद हुआ वह किसी दूसरे सिलसिले में मुरीद नहीं हो सकता (अल्मल्फ़ूज़ दोम सफा 73)

मुरीद होने के फवाइद

मुरीद होना सुन्नत है और उस से फाइदा हुजूर अक्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम से इत्तिसाले मुसलसल (मिलाप लगातार) ,यहां तक फरमाया गया कि '' जिस्का कोई पीर नहीं उस का पीर शैतान है सेह़त अ़क़ीदत के साथ सिलसिला सहीह़ा मुत्तसेला में अगर इंतिसाब बाक़ी रहा तो नज़र वाले तो उस के बरकात अभी देखते हैं जिन्हें नज़र नहीं वह नज़अ़ में,क़ब्र में,हश्र में,इस

के फवाइद देखेंगे। (फतावा रज़्वीया 12, सफा 199)

बद मज़हब का पीर शैतान है ।

जिसका कोई पीर नहीं,शैतान उस का पीर है । उस के पूरे मिस्दाक़ वह लोग हैं कि मशाइखे किराम के क़ाइल ही नहीं जैसे रवाफिज़ (शिय्या) व वहाबिया व ग़ैर मुक़ल्लिदीन,(अहले हदीस –जो इमाम की तक़्लीद न करें)

मुर्शिदे खास की दो क़िस्म

अव्वल :शैख़ इततिसाल,यअनी जिस के हाथ पर बैअ़त करने से इन्सान का सिलसिला हुज़ूर सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम तक मुत्तसिल हो जाये उसके लिए चार शराइत हैं ।

1: शैख़ का सिलसिला बइत्तिसाल सही़ह हुज़ूर सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम तक पहोंचा हो,बीच में मुन्क़ता (अलग) न हो कि मुन्क़तअ़ के ज़रियअ़ से इत्तेसाल ना मुम्किन ।

बाज़ लोग बिला बैअ़त महज़– ब ज़ुअ़मे विरासत अपने बाप दादा के सज्जादे पर बैठ जाते हैं या बैअ़त तो की थी मगर खिलाफत न मिली थी,बिला इजाज़त मुरीद करना शरु कर देते हैं,या सिलसिला ही वह हो कि क़तअ़ कर दिया गया उस में फैज़ न रखा गया लोग बराहे हवस इस में इजाज़त व खिलाफत देते चले आते हैं,या सिलसिला फी नफ्सिही अच्छा था मगर बीच में कोई ऐसा शख़्स वाक़े हुआ जो बाज़ शरायत न होने के सबब क़ाबिले बैअ़त न था,इस से जो शाख़ चली बीच में से मुन्क़तअ़ है। इन सूरतों में इस बैअ़त से हरगिज़ इत्तिसाल हासिल न होगा,बैल से दूध या बांझ से बच्चा मांगने की मत जुदा है।

2: शैख सुन्नी सहीहुल अ़क़ीदा हो,बद मज़हब गुमराह का सिलसिला शैतान तक पहोंचेगा न कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम तक।

आज कल बहुत खुले बद दीनों बल्कि बे दीनों यहां तक कि वहाबिया ने कि सिरे से मुन्किर व दुशमने औलिया हैं मक्कारी के लिए पीरी मुरीदी का जाल फेला रखा है,होशयार ! ख़बरदार ! एहतियात,एहतियात़ ।

ऐ बसा इब्लीस आदम रुए हस्त ।
पस बह़र दस्ते नबायद दाद दस्त।।

बहुत से इब्लीस इन्सानी शकल में हैं,पस हर हाथ में हाथ नहीं देना चाहिए।
3 : आ़लिम हो, इल्म फेक़ह़ उसी की अपनी ज़रुरत के क़ाबिल काफी और लाज़िम कि अक़ाइद अहले सुन्नत से पूरा वाकि़फ,कुफ्र व इस्लाम व जलालत व हिदायत के फर्क़ का खूब आ़रिफ हो,वरना आज बद मज़हब नहीं कल हो जायेगा।
सदहा कलमात व हरकात हैं जिन से कुफ्र लाज़िम आता है और जाहिल,बराहे जिहालत इन में पड़ जाते हैं अव्वल तो खबर ही नहीं होती कि उन के क़ौल या फेअ़ल से कुफ्र सरज़द हुआ,और बे इत्तेला,तौबा ना मुम्किन,तो मुब्तला के मुब्तला ही रहे। और कोई खबर दे तो एक सलीमुत्तबअ़ जाहिल डर भी जाये,तौबा भी कर ले,मगर वह जो सज्जादा व मशीखत पर हादी व मुर्शिद बने बैठे हैं। उन की अ़ज़मत खुद उन के कुलूब में है कब क़बूल करने दे।
4: फासिक़ मोलिन न हो, इस शर्त पर हुसूले इत्तेसाल का तवक्कुफ नहीं कि सिर्फ फिस्क़ बाइस फस्ख़ नहीं,मगर पीर की तअ़ज़ीम लाज़िम है। और फासिक़ की तौहीन वाजिब,दोनों का इज्तेमा बातिल।

पीर कामिल न मिले तो क्या करेः

पीर कामिल के लिए चार शराइत हैं जो उपर ज़िकर हो चुका है अगर इन शराइत का जामे पीर मिल जाए तो उस के हाथ बैअ़त कर लें अगर पीर कामिल न मिले तो उस के लिए दरुद शरीफ की कसरत का हुक्म है यअ़नी ज़्यादा से ज़्यादा दरुद शरीफ पढ़े यह तो मजबूरी की ह़ालत में है वरना अगर जामे शराइत पीर मिलने के बावजूद मुरीद न हो या मुरीद होना ज़रुरी न समझे या इन्कार करे ऐसे ही शख़्स के लिए आया है कि जिस का कोई पीर नहीं शैतान उस का पीर है वह कभी राहयाब न होगा ।
और पीर कामिल न मिले तो एक रास्ता और है कि उलमाए अहले सुन्नत की क़द्र व इज़्ज़त करे व उन की सोहबत में बैठे। यह भी मजबूरी की हालत में है।
और पीर कामिल न मिले तो– ग़ौसे अअ़ज़म को अपना पीर माने और उन की तअ़लीमत पर अमल करे। ग़ौसे अअ़ज़म ने फरमाया कि जो मुझे अपना पीर माने तो मैं उस का पीर हूं और वह मेरा मुरीद है।उन की तअ़लीमत यह हैं।

तअ़लीमाते ग़ौसे अअ़ज़म

(1) मज़हबे अहले सुन्नत व जमाअ़त पर क़ायम रहें, सुन्नियों के जितने मुख़ालिफ मसलन वहाबी,देवबन्दी,राफज़ी, तब्लीग़ी,मौदूदी,नदवी,नेचरी,ग़ैर मुक़ल्लिद,क़ादियानी,वग़ैरहुम हैं सब से जुदा रहें और सब को अपना दुशमन और मुखालिफ जानें, उन की बात न सुनें उन के पास न बैठें उन की कोई तहरीर न देखें कि शैतान को मआ़ज़ल्लाह दिल में वस्वसा डालते कुछ देर नहीं लगती। आदमी को जहां माल या आबरु का अन्देशा होगा, हरगिज़ न जायेगा। दीन व ईमान सब से ज़ियादा अ़ज़ीज़ चीज़ है। उन की मुहाफिज़त में ह़द से ज़्यादा कोशिश फर्ज़ है। माल व दनिया की इज़्ज़त, दुनया की ज़िन्दगी,दुनया ही तक है। दीन व ईमान से हमेशगी के घर में काम पड़ना है और उन की फिकर सब से ज़ियादा लाज़िम है।

(2)नमाज़े पन्जगाना की पाबन्दी निहायत ज़रुरी है मर्दों को मस्जिद व जमाअ़त का इल्तेज़ाम भी वाजिब है। बे नमाज़ी मुसलमान गोया तस्वीर (फोटू)का आदमी है कि ज़ाहेरी सूरत इनसान की मगर इन्सान का काम कुछ नहीं, बे नमाज़ी वही नहीं जो कभी न पढ़े बल्कि जो एक वक़्त की भी क़सदन छोड़ दे, बे नमाज़ी है। नोकरी, मुलाज़िमत,ख़्वाह तिजारत, वग़ैरह किसी हाजत के सबब नमाज़ क़ज़ा कर देनी सख़्त ना शुकरी,पर ले दरजे की नादानी,है,कोई आक़ा यहां तक कि काफिर का भी अगर कोई नोकर हो,अपने मुलाज़िम को नमाज़ से बाज़ नहीं रख सकता है,अगर मनअ़ करे तो ऐसी नोकरी हराम क़तई है। और कोई वसीलए रिज़्क़ नमाज़ खो कर बरकत नहीं ला सकता है। रिज़्क़ तो उस के हाथ में है जिस ने नमाज़ फर्ज़ की है और उस के छोड़ने पर ग़ज़ब फरमाता है।

3) जितनी नमाज़ें क़ज़ा हो गई हैं , सब का ऐसा हिसाब लगायें कि तख़्मीने में बाक़ी न रह जाये ज़्यादा हो जायें तो हरज नहीं और सब ब क़द्र ता़कत रफ्ता रफ्ता निहायत जल्द अदा करें काहिली न करें कि मौत का वक़्त मअ़लूम नहीं और जब तक फर्ज़ ज़िम्मा पर बाक़ी होता है। कोई नफ्ल क़बूल नहीं किया जाता, क़ज़ा नमाज़ें जब मु त अद्दिद हो जायें, मसलन सौ बार की फजर क़ज़ा है तो हर बार यूं निय्यत करें कि निय्यत की मैं ने इस नमाज़े फजर की जो सब से पहले मुझ से क़ज़ा हुई,यअ़नी जब एक अदा

हुई,तो बाक़ियों में जो सब से पहली है। इसी तरह ज़ोहर वग़ैरह हर नमाज़ में निय्यत करें, क़ज़ा में फक़त् फर्ज़ और वित्र यअ़नी हर दिन और रात की बीस रकअ़तें अदा की जाती हैं।

(4)जितने रोज़े भी क़ज़ा हुए हों, दूसरा रमज़ान आने से पहले अदा कर लिए जायें कि हदीस शरीफ में है जब तक पिछले रमज़ान के रोज़ों की क़ज़ा न कर ली जाये। अगले रोज़े क़बूल नहीं होते।

(5)जो साहेबे माल हैं। ज़कात भी दें, जितने बरसों की न दी हो फौरन हिसाब कर के अदा करें, हर साल की ज़कात साल तमाम होने से पहले दे दिया करें। साल तमाम होने के बाद देर लगाना गुनाह है । लिहाज़ा शुरु साल से रफ्ता रफ्ता देते रहें, साल तमाम पर हिसाब करें अगर पूरी अदा हो गई तो बेहतर, वरना जितनी बाक़ी फौरन दे दें और कुछ ज़ियादा निकल गया है तो वह आईन्दा साल में मजरा करलें। अल्लाह अज़्ज़ा वजल्ल किसी का नेक अ़मल ज़ाए नहीं करता।

(6)साहबे इस्तेताअ़त पर हज फर्ज़े अअ़ज़म है अल्लाह अज़्ज़ा वजल्ल ने उस की फर्ज़ियत बयान कर के फरमाया। ''वमन क फ र फइन्नल्ला ह ग़निय्यु अ़निल आ़लमीन''और जो कुफर करे तो अल्लाह सारे जहां से बे परवाह है हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने तारिके हज को फरमाया कि! चाहे यहूदी हो कर मरे या नस्रानी हो कर । ''वल अ़याज़िबिल्लाहि तआ़ला'' अन्देशों के बाइस बाज़ न रहे ।

(7) किज़्ब, फहश, चुग़ली, ग़ीबत, ज़ेना, लवात़त, ज़ुल्म, ख़ेयानत, रया, तकब्बुर, दाढ़ी,मुन्डाना या कतरवाना,फासिक़ों की वज़अ़ (पहनावा)पहनना, हर बुरी ख़सलत से बचें, जो इन सातों बातों का आ़मिल रहेगा अल्लाह व रसूल के वअ़दे से उस के लिए जन्नत है जल्ला जलालहू व सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व आलिही व अस्हाबिही वसल्लिम आमीन, बादे नमाज़े पन्जगाना क़ब्ल शरु पन्ज गन्ज क़ादरी पढ़ें ।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम,
वशश्‍ स वल क़ म र वन्नुजू म मुसख़्ख़रातिम बिअम्रिही अलालहुल ख़ल्क़ वल अम्र,तबारकल्लाहु रब्बुल आ़लमीन, गिर्दे मन गिर्दे ख़ानए मन व गिर्दे ज़न व फरज़न्दाने मन व गिर्दे माल व दोस्ताने मन ह़सारे हिफ़ाज़त तू शुद व तू निगहदारे बाशी, या अल्लाहु बि हक़्क़ि सुलैमानब्नि दाउदा अलैहिमस्सलाम व बिहक़्क़ि इहयन अशराहिय्यंव व बिहक़्क़ि अ़लीक़म मलीक़न तलीक़ अन त तअ़लमु मा फिल कुलूबि व बिहक़्कि लाइला ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाहि व बिहक़्कि या मुअ़मिनु या मुहैमिनु सल्लल्लाहु तआ़ाला अलैहि व सहबिही वसल्लम
एक बार पढ़ कर अंगुश्ते शहादत पर दम कर के तीन बार अपने सीधे कान की जानिब ब नियते ह़िसार कलिमा की उंगली से हलक़ा खींचा करें। हर वक़्त ऐसा ही करें। फिर उस वक़्त का अ़मल पन्ज गन्ज क़ादरी शुरु करें और अगर हर वक़्त की पन्ज गन्ज के अ़मल के बाद या बासितु 72 बार और इज़ाफा करें तो और बेहतर है। और अगर चाहें तो वक़्ते फजर''या ह़य्यु या क़य्यूमु बिरह़मति क अस्तग़ीसु '' वक़्ते असर ''हस्बुनल्लाहु व निअ़मल वकील''वक़्ते मग़्रिब''रब्बि इन्नी मस्सिनियद्दुर्रु व अन त अरहमुर्राहिमीन,वक़्ते ईशा''व उफव्विदु अमरी इलल्लाह,इन्नल्ला ह बसीरुम बिल इबाद'' हर एक,एक सौ ग्यारह बार मअ़ दरुद शरीफ अव्वल आख़िर ग्यारह बार दरुद शरीफ। नीज़ वक़्ते शब दरुदे ग़ौसिया शरीफ 500 बार और इज़ाफा करें कि पन्ज गन्ज ख़ास हो जाये, अव्वल आख़िर ग्यारह बार दरुद शरीफ या कम अज़ कम तीन बार शब को सोते वक़्त भी यह हिसार पढ़ा करें और अंगुश्ते शहादत पर दम कर के मकान के ह़िसार की नियत से अपने इर्द गिर्द हाथ लम्बा कर के चौ तरफा हलक़ा खींचे,फिर चित लेट कर घुटने खड़े कर के दोनों हाथ दुआ़ की तरह फैलाए हुए सीना पर रख कर आयतल कुर्सी शरीफ एक बार ,चारों कुल,बित्तरतीब सिर्फ कुल हुवल्लाह तीन बार बाक़ी एक बार पढ़ा करें। और हाथों पर दम कर के अपने सर से पांव तक आगे पीछे दायें बायें तमाम जिस्म पर हाथ फेर कर दायें करवट सोया करें

छोटे बच्चे जो खुद नहीं पढ़ सकते, उन के बड़ों से कोई अपने हाथों पर दम कर के उन के जिस्म पर हाथ फेरा करे। सूरह वाक़िया और सूरह यासीन और सूरह मुल्क याद कर लें। यह तीनों सूरतें भी बेला नाग़ा शब को सोते वक़्त पढ़ लिया करें, जब तक हिफ्ज़ याद न हों, कुरआने अज़ीम से देख कर पढ़ें यह सब पढ़ने के बाद फिर कोई बात न की जाए चुप सो रहे हैं शब में अगर ज़रुरी बात करना ही तो पहले ही बात करलें,फिर सूरह काफिरुन एक बार पढ़ चुपके सो जायें, इन्शाअल्लाह तआ़ला बलिय्यात,से मह़फ़ूज़ रहेंगे,दुशमन दफअ़ होंगे,मुरादें हासिल होगी,रिज़्के हलाल वसीअ़ होगा,फाक़ा की मुसीबत से मह़फ़ूज़ रहेंगे,और खुदा नसीब फरमाए,दौलते बेदार दीदारे फैज़ आसार सरकार हुज़र सय्यदुल अब्रार सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम से इन्शाअल्लाह मुस्तफीज़ होने की कुव्वी उम्मीद रखें। इन्शाअल्लाह तआ़ला ख़ात्मा ईमान पर होगा। अज़ाब से बचे रहेंगे। मगर सह़ीह पढ़ना शर्त है,कुरआने अज़ीम जो सह़ीह़ न पढ़ता हो उस पर फर्ज़ है कि सह़ीह पढ़ना सीखें हर ह़रफ को उस के सह़ीह़ मख़रज से निकाले

जिकरे नफी व अस्बात

लाइला ह इल्लल्लाह 200 बार इल्लल्लाह 400 बार,अल्लाह अल्लाह,600 बार अव्वल व आख़िर दरुद शरीफ तीन तीन बार

तरकीबे ज़िकरे जहर

ज़िकरे जहर से पहले दस बार दरुद शरीफ, दस बार इस्तेग़फार,3 बार आयत फज़्कुरुनी अज़् कुरु कुम वशकुरुली वला तकफुरुन,, पढ़ कर अपने उपर दम करे फिर ज़िकरे जहर शरु करे लाइला ह इल्लल्लाह 200 बार इल्लल्लाह 400 अल्लाह अल्लाह,600 बार अव्वल व आख़िर दरुद शरीफ तीन तीन बार,, यह ज़िक्र दो अज़्दह तस्बीह है उस के बाद हक़ हक़ सौ बार या कम अज़् कम बतौर सह ज़र्बी या चहार ज़र्बी।

याद दहानी

याद दारी कि वक़्ते ज़ादन तू। हमा ख़न्दां बुदन्द तू गुरयां।।
आं चुनीं ज़ी कि वक़्ते मुर्दन तू। हमा गुर्यां शुवन्द व तू ख़न्दां।।
ऐ अज़ीज़ याद रख कि ! तेरी पैदाईश के वक़्त सब हंस रहे थे।मगर तो रो

रहा था।। ऐसा जीना जी कि तेरी मौत के वक़्त सब रो रहे हों और तू हंस रहा हो।। तो अगर इख़्लास से यादे इलाही में तज़र्रोअ़ व ज़ारी करता रहे, हिज्रे हबीब व फिराक़े महबूब में दिल तपां, सीना बरयां व चश्म गिर्यह कनां रहे। तू ज़रुर ज़रुर वक़्ते इन्तेक़ाल विसाले पाकर शादां व फरहां और तेरे फिराक़ पर मख़्लूक़ नालां व परेशान होगी।

ऐ अज़ीज़! अपने यह अ़हद याद रख, जो तू ने खुदा से उस के इस नाचीज़ गुनहगार बन्दे के हाथ में हाथ दे कर किए हैं और इस फक़ीर बे तौक़ीर के लिए भी दुआ कर कि जैसी चाहे वैसी पाबन्दी एहकामे खुदावन्दी में जियूं, ता दमे वापसीं ऐसी पाबन्दी करता रहूं।

ऐ अज़ीज़! तू ने अ़हद किया है कि तू मज़हबे अहले सुन्नत पर क़ायम रहेगा हर बद मज़हब की सोहबत से बचता रहेगा,उस पर सख़्ती से क़ायम रहना,और "लातमूतुन्‍ न इल्ला व अन्तुम्मुस्लिमीन"याद रखना।

ऐ अज़ीज! याद रखना तू ने अह्द किया है कि तू नमाज़,रोज़े, हर फर्ज़, और वाजिब को भी उन के वक़्तों पर अदा करता रहगा और गुनाहों से बचता रहेगा,खुदा करे तू–अपने अह्द पर क़ायम रहे। अह्द तोड़ना हराम,सख़्त अ़ैब और निहायत बुरा काम है वफाए अ़ह्द लाज़िम है अगर चे किसी अदना से अदना मख़्लूक़ से किया हो,यह अ़ह्द तो तू ने खालिक़ जल्लो अ़ला से किए हैं।

ऐ अ़ज़ीज़! मौत को याद रख ! अगर मौत को याद रखेगा, तो इन्शाअल्लाह वर्त़ए हिलाकत से बचा रहेगा,दीन व ईमान सलामत ले जायगा आर इत्तेबाए शरीअ़त करता रहेगा,गुनाहों से बचता रहेगा।

ऐ अ़ज़ीज़! आज जाग ले कि मौत के बाद सुख़,चैन,इत्मीनान,व आराम की नींद सोता रहेगा,फरिशता तुझ से कहेगा "नम कनूमतिल उ़रुस" सुन, सुन,सुन,

जागना है जाग ले अफ्लाक के साए तले।
हश्र तक सोना पड़ेगा ख़ाक के साए तले।।

ऐ अज़ीज़! दुनिया पर मत इतरा,दनिया पर वाला व शैदा होना ही खुदा से ग़ाफिल होना है, दुनया खुदा से ग़फ्लत ही का नाम है

पर्दा की अहमियत

औरतें पर्दा को फर्ज़ जानें,हर ना मोहरम से पर्दा फर्ज़ है। न बे पर्दा फिरें , न बे पर्दा घर में रहें,बारीक कपड़े जिन से बाल या बदन चमके,पहन कर,या पहोंचों से उपर का हिस्सा या पांव के टख़ने के उपर पिन्डली का हिस्सा और गला,सीना खोल कर या बारीक कपड़ों से नुमायां होने की हालत में महज़ ग़ैर नहीं जेठ,देवर,बहनोई ही नहीं अपने सगे चचा ज़ाद,खाला ज़ाद,फूफी ज़ाद भाई के सामने होना भी हराम है। बद अन्जाम है मर्दों पर फर्ज़ है कि अपनी बीवियों बेटियों बहनों वग़ैरहा महारिम को बे परदगी से बचायें। परदे की ताकीद करें और अ़दम तअ़मील पर जिन्हें सज़ा दे सकते हैं सज़ा दें जो मर्द अपने महारिम की बे परदगी की परवाह न करेगा,ग़ैर महरमों के सामने फिराएगा,खुसूसन इस तरह कि बे परदगी के साथ बअ़ज़ अअ़जाअ की भी बे सत्री भी हो तो वह मर्द दय्यूस ठेहरेगा। वल अ़याज़िबिल्लाहि तअ़ाला

यारां बकोशेद

किए जाओ कोशिश मेरे दोस्तो। न कोशिश से एक आन को तुम थको।। यक़ीन कामरानी व कामयाबी रखो,''वल्लज़ी न जाहदू फीना लनहदियन्नहुम सुबुलना''जो लोग हमारी तलब में काशिश करते हैं ज़रुर हम उन्हें राह दिखाते हैं ,मक़सूद से वासिल फरमाते हैं,मौला तुम्हारे लिए फतेह हर बाब ख़ैर बिलख़ैर फरमाए।

उस की राह में क़दम रखते ही अल्लाह करीम के ज़िम्मे करम पर तम्हारे लिए अज्र होगा।'' वमय्य्यख़रुज मिंम्बैतिही मुहाजिरन इलल्लाहि व रसूलिही सुम्‍ म युदरिकहुल मौतु फक़द व क़ अ़ अजरुहू अलल्लाह'' हुजूर पुर नूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम फरमाते हैं मन त ल ब शैअं व जद्दा व ज द '' हां हां बढ़े चलो,बराबर बढ़े चलो,महब्बत व इख़्लास शर्त है , पीर की महब्बते रसूले महब्बत है,रसूल की महब्बत खुदा की महब्बत है महब्बत जितनी ज़ियादा होगी और अ़क़ीदत जितनी पोख़्ता होगी उतना ज़्यादा से ज़्यादा फायदा होगा, अगरचे पी अज़ आहाद नास हो, वह बाकमाल न हो मगर पीर

सहीह़ हो,कि शराएत पीरी का जामेअ़ हो, सिलसिला मुत्तसिल होगा तो सरकारे फैज़ से ज़रुर फैज़ मिलेगा। ऐ फरज़न्दे तौहीद! ळर अम्र को तौहीद में निगाह रख!

खुदा यके व मुहम्मद यके व पीर यके

तेरा क़िब्लए तवज्जोह एक होना एक ही रहना लाज़िम,परेशान नज़र,परेशान ख़ातिर,धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का, दी व दनया के हर काम इख़्लास के साथ कर उस के लिए कर,शरीअ़त की पैरवी कर,जादए शरीअ़त से एक दम क़दम बाहर न धरना,खाना,पीना,उठना,बैठना,लेटना,सोना,जागना, जाना,आना,कहना सुनना,लेना, देना,कमाना,ख़र्च करना,हर अम्र(हुक्म)उसी के लिए कर, उसी की रज़ा हो मद्दे नज़र।

ऐ रज़वी! फना फिर्रज़ा हो कर सरापा रज़ाए अह़मदी,रज़ाए इलाही हो जा। तेरा मक़्सूद बस तेरा मअ़बूद हो, उस की रज़ा ही तेरा मत्लूब हो।

रया से बचने की कोशिश करते रहना,हर काम इख़्लास से खुदा की रज़ा के लिए इत्तेबाए शरीअ़त करना यह बड़ी सआ़दत अज़ीम मुजाहेदा व रियाज़त है,हमारे बअ़ज़ मशाइख़ का इरशाद है कि लोग रियाज़तों की हवस करते हैं कोई रियाज़त व मुजाहिदा अरकान व आदाब नमाज़ की रियाअ़त करने के बराबर नहीं। खुसूसन पांचों वक़्त मस्जिद में बा जमाअ़त अदा करना जब्कि शरई उज़्र न हो।

ख़त्मे कुरआ़ने करीम

औलियाए कामिलीन का इरशाद है कि बे शुब्हा तिलावते कुरआन बराए क़ज़ा हवाएज मुजर्रब है जितना भी रोज़ाना हो सके अदब के साथ पढ़ता रहे, अगर वह इस तरह पढ़े बहोत बेहतर जल्द इन्शाअल्लाह कामयाब हो रोज़े जुमा से शुरु करो और पन्जशम्बा (जुमेरात) को ख़तम करो रोज़े जुमा सूरए फातेहा से सूरए माएदा तक,शम्बा(सनीचर)को सूरए इनआ़म से सूरे तौबा तक,और यकशम्बा(इतवार)को सरए यूनुस से सूरए स़्वाद तक,चहार शम्बा (बुध)को सूरए ज़मर से सरए रहमान तक और पन्जशम्बा (जुमेरात)को सूरए वाक़िया से आख़िर कुरआन तक ख़लवत में पढ़ें,बीच में

बात न करें,हर महिम के लिए अललइत्साल 12 ख़तम कुरआन को अक्सीरे अअ़ज़म यक़ीन करें।

फज़ीलते दरुद शरीफ

दरुद शरीफ के फज़ाएल व बरकात बे शुमार अहा़दीस में मज़कूर है, यहां सिर्फ एक हदीस दर्ज की जाती है जिस से अन्दाज़ा होगा कि हुज़ूर नबिय्ये करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के दरबारे गुहरबार में हदया दरुद शरीफ पेश करना किस क़दर फवाएद दुनयवी व उख़रवी को मुतज़िमन है।

हज़रत अबी बिन कअ़ब रदियल्लाहु तआ़ला अन्ह फराते हैं कि मैं ने नबिय्ये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अर्ज़ किया कि हुजूर मैं आप पर ब कस्रत दरुद भेजना चाहता हूं पस उस के लिए कितना वक़्त मुक़र्रर करुं ? नबिय्ये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जितना चाहो,हां अगर ज़्यादा करो तो तुम्हारे लिए बेहतर है,मैं ने अर्ज़ किया कि आधा वक़्त। फरमाया तुम्हें इख़्तेयार में है, हां अगर ज़्यादा करो तो तुम्हारे लिए बेहतर है, मैं ने अर्ज़ किया कि दो तिहाई वक़्त। फरमाया तुम्हें इख़्तेयार है, हां अगर ज़्यादा करो तो तुम्हारे लिए बेहतर है, मैं ने अर्ज़ किया कि तमाम वक़्त। तो हुज़ूर रहमते आ़लम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि अगर ऐसा करो तो तुम्हारे लिए तमाम मक़ासिद (दीनी व दुनयावी)पूरे होंगे और तमाम गुनाह (ज़ाहेरी व बातिनी)मिटा दिए जायेंगे।

नोटः– तालिबीन को इख़्तेयार है कि वह मज़कूरह औरादो व ज़ाएफ मुकर्ररह वक़्त पर पढ़ा करें या सिर्फ दरुद शरीफ कलिमा तय्यबा,तिलावते कुरआन,व तसव्वुर शैख़ में मशगूल रहें । इन्शाअल्लाह तआ़ला अज़ीम फवाएद ज़ाहिर होंगे।

तसव्वुर शेख़

ख़लवत में आवाज़ों से दूर हो ब मकान शैख़,और विसाल होगया तो जिस तरफ मज़ार शैख़ हो,मु त वज्जेह हो कर बैठे महज़ ख़ामोश बा अदब ब कमाले ख़ुशू और सूरत शैख़ का तसव्वुर करे और अपने आप को उन के हुज़ूर जाने और यह ख्याल दिल में जमाए कि सरकारे रिसालत अलैहि अफ्ज़लुस्सलातु वत्तस्लीम से अनवार फ़ुयूज़ शैख़ के क़ल्ब पर फाइज़ हो रहे हैं और मेरा क़ल्ब शैख़ के नीचे बहालते दरयोज़ा गरी लगा हुआ है, उस में अन्वार व फ़ुयूज़ उबल उबल कर मेरे दिल में आरहे हैं इस तसव्वुर को बढ़ाइए यहां तक कि जिस्म जाए और तकल्लुफ की हाजत न रहे, उस की इन्तेहा पर सूरत शैख़ पर सूरत शैख़ खुद मु त मस्सिल हो कर मुरीद के साथ रहेगी और हर काम में मदद करेगी और उस राह में जो मुश्किल उसे पेश आएगी उस का हल बताएगी।

और क़ादरी सिलसिले के वज़ाइफ

फातिहा सिलसिला

यह शिजरए मुबारका हर रोज़ बादे नमाज़े सुबह एक बार पढ़ लिया करें, उस के बाद दरुदे ग़ौसिया सात बार अल्हम्दो शरीफ एक बार आयतल कुर्सी एक बार कुल हुअल्लाह शरीफ सात बार फिर दरुदे ग़ौसिया तीन बार पढ़ कर उस का सवाब इन तमाम मशाइख़े किराम की अरवाहे तय्यबा की नज़्र करें जिस के हाथ पर बैअ़त की है। अगर वह ज़िन्दा है तो उस के लिए दुआ़ए आफियत व सलामत करें वरना उस का नाम भी शामिले फातिहा कर लें दरुदे ग़ौसिया यह है

अल्लाहम्मा सल्लि अ़ला सय्यिदना व मौलाना मुहम्मदिम्मअ़दनिल जूदि वल क र मी व आलिही वबारिक वसल्लिम

पन्ज गन्ज क़ादरीः– सुबह बाद नमाज़े फजर, या अ़ज़ीजु या अल्लाह يا عزيز يا الله बाद नमाज़े जुहर, या करीमु या अल्लाह يا كريم يا الله असर बाद या जब्बारु या अल्लाह يا جبار يا الله

बादे नमाज़े मग्रिब, या सत्तारु या अल्लाह يا ستار يا الله इशा बाद या ग़फ्फारु या अल्लाह يا غفار يا الله

यह सब वज़ीफे 100 बार अव्वल आख़िर तीन बार दरुद शरीफ

और पांच वज़ीफे:—बादे नमाज़े मग्रिब और बादे नमाज़े फजर दस बार(1) रब्बि इन्नी मग़लूबन फनतसिर (2) दस बार:— रब्बि इन्नी मस्सनियद्दुर्रु व अन त अरहमुर्राहिमीन

(3) दस बार :—सयहज़मुल जमउ व युवल्लूनद्दुबुर (4) दस बार :—अल्लाहुम्म इन्ना नजअ़लु क फी नुहूरिहिम व नऊज़ुबि क मिन शुरुरिहिम

(5) दस बार :—हस्बियल्लाहु ला इला ह इल्ला हु व अ़लैहि तवक्कलतु व हु अ रब्बुल अर्शिल अज़ीम

अव्वल व आख़िर तीन बार दरुद शरीफ फजर बाद और मग्रिब बाद

इस की मदावमत से सब काम बनेंगे और दुशमन मग़लूब रहेंगे।

क़ज़ाए हाजात व हुसूले ज़फर व मग़लूबिए दुशमनान

(1)अल्लाहु रब्बी ला शरी क लह 874 बार अव्वल व आख़िर ग्यारह मरतबा दरुद शरीफ इस क़दर अ़ददे मुअय्यन के साथ बा वज़ू क़िब्ला रु दो ज़ानू बैठ कर रोज़ाना ता हुसूले मुराद पढ़ें और इसी कलिमा को उठते बैठते, चलते फिरते,वज़ू बे वज़ू हर ह़ाल में बे गिन्ती बे शुमार ज़बान से जारी रखें

(2)हस्बुनल्लाहु व निअ़मल वकील, 450 बार रोज़ाना ता हुसूले मुराद, अव्वल व आख़िर ग्यारह मरतबा दरुद शरीफ, जिस वक़्त घबराहट हो इसी कलिमा की बे शुमार तक्सीर करें।

(3)बादे नमाज़े इशा एक सौ ग्यारह बार''तुफैल हज़रत दस्तगीर दुशमन हो वे ज़ेर'' अव्वल व आख़िर ग्यारह मरतबा दरुद शरीफ ता हुसूले मुराद, यह तीनों अ़मल अमूर मज़कूर के लिए निहायत मजर्रब व सहलुल हुसल हैं उन से ग़फ्लमत न की जाए।

जब कोई हाजत पेश आए हर एक अपने अपने अअ़दाद के मुताबिक़ वक़्ते मुतअ़य्यिन पर पढ़ा जाए पहले और दूसरे के लिए कोई वक़्त मुअय्यन नहीं, जिस वक़्त चाहें पढ़ें और तीसरे का वक़्त बादे नमाज़े इशा है ।

पीर पर मुरीद का हक़ :

मुरीद पर पीर का हक़ यह कि –

1: उसे मिस्ल अपनी औलाद के जाने।

2: जो बात बुरी देखे उस से मना करे।रोके।

3: नेकियों की तरग़ीब दे ।

4: हाज़िर व ग़ायब उस की ख़ैर ख्वाही करे।

5: अपनी दुआ में उसे शरीक करे।

6: उस की तरफ से बराहे नादानी जो गुस्ताख़ी बेअदबी,वाके हो उसे दर गुज़र करे।

7: उस पर अपने नफ्स के लिए नाराज़ न हो।

8: उस की हिदायत के लिए गुस्सा ज़ाहिर करे और दिल में उस की भलाई का ख़्वास्तगार रहे।

9: उस के माल से कुछ तलब न करे।

10: हत्तल मक़दूर उस की हर मुश्किल में मददगार रहे।

मुरीद पर पीर का हक़ :

पीर के हुकूक़ मुरीद पर शुमार से ज़्यादा है खुलासा यह है।

1: उस के हाथ में मुर्दा बदस्त ज़िन्दा हो कर रहे।

2: उस की रज़ा को अल्लाह की रज़ा उस की ना खुशी को अल्लाह की नाखुशी जाने।

3: उसे अपने हक़ में तमाम औलियाए ज़माना से बेहतर समझे।

4: अगर कोई नेअ़मत बज़ाहिर दूसरे से मिले तो उसे भी पीर ही की अ़ता और उसी की नज़्रे तवज्जोह का सदक़ा जाने।

5: माल, औलाद,जान,सब उस पर तसद्दुक़ करने को तय्यार रहे।

6: उस की जो बात अपनी नज़र में ख़िलाफे शरअ़ बल्कि मआज़ल्लाह कबीरा मालूम हो उस पर भी न एतेराज़ करे न दिल में बद गुमानी को जगह दे बल्कि यक़ीन जाने कि मेरी समझ की ग़ल्ती है।

7: दूसरे को अगर आस्मान पर उड़ता देखे जब भी पीर के सिवा दूसरे के हाथ में हाथ देने को सख़्त बुरा जाने।

8 : पीर अगर शरीअ़त से भटक जाए तो या गुमराह हो जाये तो अपने आप बैअ़त टूट जाती है जिस तरह मुरीद गुमराह हो जाये तो भी बैअ़त टूट जाती है। ऐसे मौक़े पर पीर अगर गुमराह या शरीअ़त से भटक जाये तो मुरीद पीर की हिदायत के लिए दुआ़ करे। अगर पीर हिदायत पा गया तो उसी पीर से फिर मुरीद हो जाये और अगर हिदायत नहीं पाया तो दूसरे पीर की रुजूअ़ करे ।

9: एक बाप से दूसरा बाप न बनाए ।

10: उस के हुज़ूर बात न करे हंसना तो बड़ी चीज़ है।

11: उस के सामने आंख कान दिल ह़मा तन उसी की त़रफ मसरुफ रखे।

12: जो वह पूछे निहायत नर्म आवाज़ से बकमाले अदब बता कर जल्द ख़ामोश हो जाए।

13: उस के कपड़ों,उस के बैठने की जगह,उस की औलाद,उस के मकान,उस के मुहल्ला,उस के शहर की तअ़ज़ीम करे।

14: उस के ग़ायबाने में भी उस के बैठने की जगह न बैठे।

15: रोज़ाना अगर वह ज़िन्दा है उस की सलामत व आ़फियत की दुआ़ बकसरत करता रहे और अगर इन्तेक़ाल हो गया हो तो रोज़ाना उस के नाम पर फातिह़ा व दरुद शरीफ का सवाब पहोंचाए।

16: उसके दोस्त और उस के दोस्त का दोस्त,उसके दुशमन और उसके दुशमन का दुशमन रहे।

17: ग़रज़ अल्लाह तआ़ला व रसूल जल्ला जलालुहू व सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के बाद उस के इलाक़ा को तमाम जहां के इलाक़ा पर दिल से तरजीह़ दे और उसी पर कार बन्द रहे वग़ैरह वग़ैरह।